आनंद निकेतन : कार्यविवरण 2018-19

हमारा ध्येय

भारतीय संविधान को अपेक्षित स्वतंत्र, शोषण मुक्त, निर्भय आणि शाश्वत मानवीय समाज के लिए आवश्यक नयी पिढी के सर्वांगिण विकास को आविष्कृत करनेवाली रचना का निर्माण तथा प्रत्यक्ष कार्य

वर्षारंभ

बेहाल, झुलसती गर्मी के बाद जून मध्य में बरसात का आगमन होता है और उसीके साथ नए सत्र की शुरुवात भी. विद्यालय में बच्चो का स्वागत पुरे उत्साह से करने के लिए उत्सुक अध्यापकों द्वारा १५ दिन सालभर के क्रियाकलापों का नियोजन करने में व्यस्त रहे. हर वर्ष नयापन लाने की कोशिश विद्यालय के साथी करते रहते है. नए वाचनपाठ, नए साधन, किताबे, प्रकल्प इन सबके लिए जुटकर लगे अध्यापक साथियों ने पुरे हर्षोल्हास के साथ बच्चों का स्वागत किया. नए दोस्तों का विशेष स्वागत उनके लिए बनाई गई खास टोपियाँ पहनाकर किया गया. हर कक्षा के द्वार पर फूल- पत्तों की बनी रंगोली मन की प्रसन्नता को बढ़ावा दे रही थी. 'पाहिले नमन रविराजाला, ज्याने जन्म दिला या धरणीला' इस खुबसुरत किन्तु सरल प्रार्थानासे शुरू हुआ. गर्मी के छुट्टियों की बाते, अपनों के साथ बिताया समय, प्रवास आदि कई बाते एक दुसरे से बच्चों को कहनी थी साथ साथ नयी कक्षा, कुछ नए साथियों का मिलना, नए अध्यापकों द्वारा सिखाए जाने की भी मजा थी. बालवाडी में तो नयी बच्चों के साथ कुछ हँसी कुछ गम का माहौल सप्ताहभर चलता रहा.

बालशिक्षा:

बालवाडी में तो नयी बच्चों के साथ कुछ हँसी कुछ गम का माहौल ३-४ सप्ताहभर चलता रहा आखिर कुछ बच्चे पहली बार जो घर से बाहर निकले थे. माँ-पिता के जातें समय बेतहाशा रोनेवाले कुछ बच्च्वों का थोड़े समय बाद ताई का हाथ पकडकर रहना, सहमते हुए किन्तु स्वतंत्र रूप से क्रियाकलापों में सहभागी होना, और कुछ महीनों बाद मानों एक नया घर मिला हो इतनी सहजता से बालवाडी में सभी से घुल- मिल जाना, यहाँ तक की बालवाडी ख़तम होने पर भी खेल में मस्त, माँ-पिता के साथ घर जाने के लिए अनुत्सुक इन्ही बच्चों को देखकर बड़ा आश्चर्य होता है.

खेलगट, शिशुगट तथा बालगट तीनों स्तर पर बच्चों के अनुभवों पर रोज बातचीत होती रही. नये अनुभवों की विशेष योजना करते समय भी बच्चे बिनाहिचक व्यक्त होते रहे इसकी कोशिश रही. भ्रमण पर निकले बच्चों में होती बातचीत का एक उदाहरण देखें. "मेरे गाँव में खूब सारी बकरियां है, मै बकरी को रोज चारा देती हूँ", जान्हवी. "मुझे गाय का बछड़ा बहुत अच्छा लगता है" ओम. "गाय को रोज चारा देना पड़ता है", सर्वेश. "हमारे यहाँ भी इसी तरह की गाय है, गाय को मुँह है किन्तु वह हम्बा बोलती है. हमारी तरह बात नहीं कर सकती ", नवीर. "बेल का पेड़ कितना बड़ा है; ल का पत्ता भगवान् को चढाते है, ", भक्ति. बेल के पेड़ में कांटे होते है", काव्या. "तितलियाँ कितनी रंगबिरंगी होती है!", ओम. प्रतिसाद के रूप में भक्ति,"उसे पकड़ना नहीं हं, उनके पंख नाजुक होते है". बच्चे जैसे जैसे बड़े होते है, शब्दों का भंडार विस्तृत होते जाता है; वाक्यों में नए शब्दों का प्रयोग करने में उन्हें मजा आता है. यह सारा सहज रूप से होने के लिए उनकी ताईयाँ दक्ष रहती है. मौखिक भाषा के साथ साथ बच्चों के लिखित अभिव्यक्ति चित्रों के द्वारा होती है. अपने अनुभवों को बारीकियों से व्यक्त करते है बच्चे. जो चित्रों में देखते है उन्हें वे हर कोई अपनी व्यक्तिगत लिपि में व्यक्त भी होता है. महत्त्वपूर्ण तो यह जानना होता है की अपने अनुभवों को लिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है. ताईने हर शिशु के मन का वर्णन उनके लेखन के निचे जब किया तो जाना की कितना कुछ वे व्यक्त करना चाहते है. उनकी इस इच्छा को जागृत करने का, प्रोत्साहित करने का लगातार प्रयास तीनों स्तर पर जारी रहा. गोशाला भेंट, सब्जी मंडी, गोपुरी का कपडे का काम, बाग़, चित्ररूप किताबों की दुनिया तो बच्चे बेहद पसंद करते है. किताबो का सम्मान करना बालवाडी से ही समझाया जाता है.

साधनों के साथ व्यक्तिगत रूप से तथा छोटे समूह के रूप में काम और खेल दोनों के माध्यम से सिखाने का मौका मिले इसका प्रयास रहा. भाषा, गणित, विज्ञान, जीवन व्यवहार आदि की प्राथमिक समझ अनुभव से बन सकें इसके हेतु विभिन्न तरह के साधन ध्यानपूर्वक बनाने की कोशिश रही है. शारीर के विभिन्न अवयवों का समन्वय, संतुलन करने के लिए जीवन व्यवहार, अन्दर तथा बाहरी खेलों का नियमित रूप से आयोजन होते रहा. सहयोग की भावना, संयम तथा स्वानुशासन का विकास, अपने दोस्त तथा परिवेश के प्रति जिम्मेदारी, सुन्दरता का आनंद लेना आदि वृतियों का ध्यानपूर्वक संवर्धन करने का प्रयास रहा. गीत- नृत्य- नाटक आदि की अभिव्यक्ति तो विशेष कही जानी चाहिए. जत्रा के दरम्यान हुई इस खुली अभिव्यक्ति में वेशभूषा, स्टेज आदि में अभिभावकों की भी विशेष मदद रही. आद्य की अम्मा का तो विशेष आभार व्यक्त करना होगा. आद्य इस वर्ष 'स्व' को नियंत्रित करना, ताई तथा दोस्तों के साथ कुछ संवाद कर पाना इसमें विशेष प्रगति कर सका. नाटक तथा नृत्य के दौरान जिस समझबुझ के साथ वह व्यक्त हुआ उसके लिए उसके अपने प्रयासों के साथ साथ उसकी माँ, बालवाडी की सभी ताई तथा उसे खुले दिल से स्वीकारनेवाले उसके छोटे दोस्त सभी को श्रेय जाता है. विशेष बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा का यह एक सफल प्रयोग कहा जा सकता है. अवनी को आनंद के क्षण देने में तो विद्यालय सफल रहा है किन्तु उसके विकास में मदद करने में हमारी मर्यादा भी ध्यान में आती है. नवीर की अम्मा, ओजसताई का विशेष आभार उनके सातत्यपूर्ण सुझाव तथा विद्यालय के अन्य कार्यक्रमों में विशेष सहयोग के लिए. उनके बिना बड़े बच्चों का पथनाट्य इतना सुन्दर रूप न ले सका होता. उनकी बच्चों के साथ की सहजता विशेष माने रखती है.

खेती के काम को प्राथमिकता:

बरसात का पहला महीना: विद्यालय की बाग़ बच्चों की चहल पहल से खुशा होती है. इस वर्षा भी शंकरदादा तथा पंडित दादाने बाग़ की जमीन सब्जियों के लिए तैयार रखी थी. एक एक कर सभी कक्षाए अपने अपने प्लाट में सब्जियाँ लगाने का आनंद ले रहे थे. भिन्डी, गवार, चौलाई इन सब्जियों के साथ साथ मुंग, हल्दी भी लगाईं गई. इन फसलों का खूब ध्यान भी रखा बच्चों ने. निंदाई, गुड़ाई के काम के साथ साथ फसलों के बढ़ने में सहाय्यकारी जीवामृत बनाना तथा उसका उपयोग करना भी बच्चोंने सीखा. जमीन का उपजाऊपण बना रहने के लिए खेत से निकलनेवाली घास खेत

में ही लिटाकर मल्चिंग करने का महत्त्व भी बच्चों ने जाना. कंपोस्ट खाद बनाने के तरीके वे सीख पाए. खेत में आनेवाले रोग के कीड़े, उसके बाद बढ़ने वाले मित्र कीड़ें इनका परिचय करने का भी उन्हें मौक़ा मिला. अच्छी नमी में पौधों का बढ़ना या मिटटी में अति पानी के कारण उनका सडना क्या होता है, पौधों के बीचा के अंतर तथा बढ़ने से प्रकाश संस्लेषण का संबंध, उनके पत्ते, फुल- फल तथा जड़ों को समझना कक्षा ५ से ७ के बच्चों के लिए विशेष अवसर था. शत्रु किड या मित्र किड क्या होते है, प्राकृतिक रूप से ये रचना कैसे काम करती है यह वे समझ पाए. मधुमक्खी से सामान्यत: डरनेवाले बच्चे, उनका खेती के साथ कितना गहरा संबंध है यह समझ पाए. बुआई, दवाई का छिडकना, खाद देना आदि का सही समय न रखा जय तो आनेवाली फसल पर बहुत असर पड़ता है यह बच्चे अनुभव कर पाते है. कक्षा ४ के भिन्डी पर दशापर्णी अर्क का उपयोग सही समय पर हुआ किन्तु कक्षा ५ की सब्जियों पर नहीं हो पाया अत: दोनों के उत्पादन में बहुत फर्क पडा.

परन्तु, लगकर आनेवाली बारीश ने भिन्डी छोड़कर बाकी सब्जियों की फसल खराब कर दी. खेत के कंटूर बांध, हमारी सेंद्रिय दवाइयां भी इस बार सभी के फसलों पर एकसा परिणाम न दे सकी. इस परिस्थिति को भी वैज्ञानिक समझ बढाने हेतू तथा किसान के परिस्थिती समझाने हेतू काम में लाया गया. प्रकृति के सामने मेहनत के बावजूद भी कभी कभी असफलता का सामना करना पड़ता है यह जानना संभव हुआ. बड़े बच्चों के लिए प्रकृति में अत्यधिक मानवी हस्तक्षेप, आत्यंतिक नागारिकरण तथा औद्योगीकरण का तापमान वृद्धि में तथा उस कारण बरसात के पॅटर्न में आनेवाली अनियमितता के बारे में भी जानने का मौक़ा मिला. सब्जी की फसल तो गई किन्तु कपास, हल्दी तथा तुअर अच्छी रही. कपास की फसल बोते समय हमने इसकी स्थानिक प्रजातियों से सम्बंधित हमारा इतिहास तथा उससे बननेवाले कपड़ों का इतिहास भी वे समझ पाए. स्थानिक प्रजातियाँ लगाने में किसान का बीज स्वावलंबन कैसे बना रहता है यह वे समझ पाए. पाठ्यपुस्तके तो अब एक सीमा में रासायनिक खेती तथा कीटनाशकों के दुष्परिणाम कहने लगे है, किन्तु डॉ. वन्दना शिवा द्वारा लिखित किताबों से खेती के आधुनिक तंत्र तथा कंपनियों द्वारा बीज निर्माण प्रक्रिया का केन्द्रिकरण किस तरह किसानों को गुलामी तथा आत्महत्या की ओर ले जा रहा है यह अध्यापक तथा बड़े छात्र समझ पाए. हमारे अस्तित्व के लिए, स्थायी खेती के लिए जैवविविधता महत्त्व कितना है यह कुछ लेखों से समझ पाए. माधव गाडगीळ जी केरल की प्राकृतिक आपात स्थिति, जैवविविधता पर लिखे गए लेख, जवार – बाजरा- रागी जैसे मिलेट का पोषण तथा पर्यावरणीय मूल्य बतानेवाले विशेष लिखा, अशोक बंग द्वारा किसानों की परिस्थिति पर लिखी गई लेखमाला अन्नविषयक समझ गहरी करने में मददरूप हुए. कक्षा 6 और 7 के बच्चों के लिए एन.सी.इ.आर.टी. के किताब से "दामजीभाई का परिवार तथा गुजरात के किसान" की कहानी खेती की ऐतिहासिक समझ बनाने में उपयोगी साबित हुई. इन बच्चों द्वारा स्व को बीज और दामजीभई के पोते/पोती के स्थान पर रखकर चिठ्ठियाँ लिखने का कार्य दिया गया था जिसमे बच्चों की समझ खुबसुरती से उभरकर आयी.

दुसरे सत्र में रबी की फसल तुलनात्मक रूप से आफी अच्छी रही. किन्तु फरवरी से ही पानी की दिक्कत महसूस होने लगी अत: पत्ता साग फेब्रुवरी में नए सिरे से नही लगा पाए. मेथी, पालक, धनिया, शेपू, मुली नवलकोल, फुलगोबी, बीट, प्याज, टमाटर, बैंगन आदि सब्जियाँ विभिन्न कक्षाओं द्वारा लगाई गयी. इन दिनों में तो खेत की खुबसुरती विशेषरूप से ध्यान में आती है. इन फसलों के लिए जमीन तैयार करने का काम भी बच्चे ही करते है. फोर्क, खुरपी , पंजा, फावड़ा आदि का उपयोग सिखना, बड़े बच्चों के मदद से छोटों ने सिखाना यह इस दौरान सहज संभव होता है. तेजी से बढ़नेवाली यह सब्जियाँ लेने में बच्चों ने बहुत आनंद महसूस किया. क्येरियाँ बनाना, उनकी परिमीती, क्षेत्रफल गिनना, अपने खेत का नक्शा बनाना, सब्जियों का वजन करना, गठ्ठों में बाँधकर बिक्री करना, हिसाब रखना कितने ही काम करने का मजा बच्चों ने लिया. अपना हिसाब ठीक रहे इसके लिए अध्यापकों से भी बिना हिचक कल के रहे पैसे माँगते हुए छोटे बच्चो को देखकर मजा आता रहा. अध्यापक, छात्र सभी एक वक्त पर, एक स्तर पर आकर यह काम करते है, कई चीजे एक साथ सीखते भी है. अत: सामान्य रूप से उम्र तथा अधिकार दोनों के बीच का अंतर ख़त्म होकर बराबरी का / स्नेह का रिश्ता बनता है. बीज से बीज तक का प्रवास समझने का अवसर भी लिया गया. व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर काम करते हुए सहयोग की भावना के साथ अपने काम के प्रति जिम्मेदारी समझने का भी मौक़ा इस काम द्वारा सभी को प्राप्त हुआ.

विषयो में बटें हमारे पाठ्यक्रम तथा परीक्षा तंत्र हमें जीवन की सहज आवश्यकताओं की समझ बनाने में बेहद अधूरा सिद्ध होता है. ऐसी परिस्थिती में स्व, स्थानीय प्रकृति तथा समाज, गाव से राष्ट्र तथा आंतरराष्ट्रिय बाजार तक, सूक्ष्म से स्थूल तक की समझ बनने में यह जीवन से अत्यंत करीबी से जुडा उत्पादक काम बेहद महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है इसका बार बार प्रत्यय आता है. कुल मिलकर यह कह सकते है कि 8-9 वर्ष के अनुभव के अंत तक छात्र, जमीन की उर्वरकता का महत्त्व, विषमुक्त अन्न की आवश्यकता, अन्न की विविधता, और बाजार का हमारे किसान तथा अन्न पर होने वाले प्रभाव को समझने में मोटे रूप से परिचित हो जाता है. अर्थात यह कहना ठीक होगा कि अध्यापकों का समूह जितना अध्ययनशील और चिंतनशील होगा उतनी गहराई से वह सहयोगी शिक्षा का आनंद छात्रों के साथ स्वयं भी महसूस करेगा, जीवन में इस ज्ञान का उपयोग करेगा.

एक नजर डाले इस वर्ष के उत्पादन पर

खेती शिक्षा के लिए समय: प्रति कक्षा (2 से 8)/वर्ष = लगभग ६० घंटे ; कक्षा 9 और 10 के लिए प्रति वर्ष लगभग ४५ घंटे

	बच्चों के बाग़ से उत्पादन वर्ष 2018- 19											
कक्षा	छात्रों की संख्या	सब्जियों का उत्पादन (किलो में)										
		भिन्डी	मेथी	पालक	शेपू	धनिया	मुली	गोबी	धनिया बीज	राई बीज	उत्पादन किलो में	कीमत
बालवाडी	50	-	3	1	1	1	30				12	480
1	19	-	5	2	3	-	-	-	-	-	10	400
2	23	-	8.5		6.25	3.75	-	-	-	-	18.5	740
3	28	3	7.5	3	3	4	-	-	-	-	20.5	820
4	23	18.5	9.25	3.75	7.5	-	-	10	-	-	49	1960
5	27	5.75	36.75	6.25	6.5	1.3		22	-	-	78.3	3132
6	26	6.5	10	8	-	-	-	10	-	-	34.5	1380

7	25	-	12	7	3	20	-	3	-	-	35	1400
8	20		19.5	3.5	1	-	-	-	-		24	960
9	15	-	-	-	-	-	-	-	-	2.5	2.5	250
10	11	-	-	-	-	-	-	-	10	-	10	2000
	265	कुल उत्पादन									294	13,522

विद्यालय के लिए तुअर दाल, कपास, हल्दी , मूंगफली, प्याज, टमाटर बैंगन आदि का भी उत्पादन लिया गया जिसमे आंशिक रूप से बच्चों की मदद हुई तथा ये फसलें भी अध्ययन के लिए उपयोग में लाई गयी.

अन्न तथा रसोई से शिक्षा:

हमारी संस्कृति में "अन्न हे परब्रम्ह" कहा जाता है. जिस अन्न से इस शरीर की धारणा होती है उसके बारे में हम बहुत कम सोचते है. हमारी आदतें / परम्पराएं बिना सोचे बनाए रखना ठीक नहीं. उससे सम्बंधित स्वास्थ्यविज्ञान, मनोविज्ञान, सामाजिक तथा पर्यावरणीय समझ सभी को बेहतर रूप से जानने का मौक़ा यह काम हमें देता है. इतनाही नहीं तो गणित, विज्ञान के अन्य क्षेत्र की समझ भी विकसित करने में रसोईघर का सृजनात्मक रूप से उपयोग किया जा सकता है. यह काम विद्यालय में प्रासंगिक रूप से किया जाता है. उम्र के अनुरूप को विभिन्न पदार्थ बच्चों ने अपने अध्यापकों के मार्गदर्शन में बनाए और साथ में खाने का भी आनंद लिया. स्त्री हो या पुरुष , लड़का हो या लडकी दोनों के लिए दैनिक आवश्यकताओं के बारे में स्वावलंबी बनना, इन कामों को सहज रूप से तथा आनंद से करने की वृत्ति विकसित होने के लिए यह मौके उपलब्ध कराए गए. इस काम का महत्त्व समझना, तथा उससे पोषणमूल्य, संतुलित आहार, स्वच्छता की समझ, समेटने के उबाऊ काम का भी महत्त्व तथा यह काम भी बांटकर करने की आवश्यकता समझना संभव हुआ.

कक्षा 1 से 2 के बच्चों ने मुख्य रुप से सरबत, कच्चा चिवड़ा, खिचडी, भिन्डी की सब्जी आदि बनाने के अनुभव लिए. कक्षा 3-4 के बच्चों ने अंकुर लाकर मिश्र दलहन का पदार्थ बनाना, सब्जियाँ डालकर अधिक पौष्टिक खिचडी , साग डालकर मिश्र दाल, मेथी की सब्जी आदि अध्यापक के सहयोग में बनाई. वजन करना, सब्जियाँ साफ करना, काटना, आदि अनुभव उनके लिए. चौथी के बच्चों ने नमक या चीनी से टिकनेवाले आचार मुरब्बे बनाने का प्रत्यक्ष अनुभव लेने के लिए नीबू का अचार बनाया. भुनी हुई मूंगफली- चना- तील- जवस आदि की चटनियाँ बनाई.

कक्षा ५ में दही ज़माना, खमीर लाकर इडली बनाना आदि अनुभव लेते समय सूक्ष्म जंतुओं का उपयोग हम जीवन में कैसे करते है , उनका विकास किस तापमान पर अच्छी तरह होता है यह जाना. ककडी, गाजर, मुली, बीट आदि के कच्चे सलाद और दही के साथ रायते बनाए. भोजन में सूक्ष्म पोषक तत्त्व तथा रेशा का महत्त्व समझा. इसके अलावा कई अन्य बाते भी जानी, जैसे की, किताबों से पोषक तत्वों की जानकारी लेना, प्रमाण जानना आदि.

कक्षा 6 में तो 'अन्न और खेती' विषय को लेकर विशेष प्रोजेक्ट लिया गया था. खेती के विभिन्न अनुभवों के साथ साथ खानपान सम्बन्धी दक्षताओ को भी समझा. विभिन्न दालों का उपयोग करते हुए खमीर लाकर अप्पे बनाए तथा बेहतरीन चटनी के साथ मिलकर स्वाद लिया. हमारी खाने की आदतों पर बाजार का प्रभाव किस तरह बढ रहा है इस पर भी चिंतन हुआ. मॅग्गी, चॉकलेट, लैस, चिप्स आदि के आत्यन्तिक नमकयुक्त पदार्थ के अधीन होना सेहत के लिए कैसे हानिकारक हो सकता है यह स्वयं में झाँककर

समझाने की कोशिश की. स्वस्थ्य विषयक बाते केवल किताबी अध्ययन और परीक्षा के हेतु न पढ़े बल्कि उसका संबंध अपने जीवन से जोड़ने की कोशिश हो इसके लिए अपने आहार की एक सप्ताह की तालिका बनाकर विश्लेषण किया गया. अपनी पसंद – नापसंद को वैज्ञानिक आधार के साथ समझने की कोशिश हुई.

कक्षा 7 वी के बच्चों ने मेथी के पराठे बनाए, कुशलता से बेलना तथा सेकना सिखा. अंकुरित मटकी की उसळ बनाई. रक्षाबंधन के कार्यक्रम में मूंगफली, तील और गुड की बर्फी बनाने में कक्षा 7 और 8 के बच्चों का विशेष सहयोग रहा. ३०० लोगों के लिए मूंगफली खरीदना, साफ़ करना, भूनना, गुड फोड़ना आदि काम उन्होंने लगन के साथ किये. इस बहाने चीनी और गुड बनाने की प्रक्रिया में फर्क को जानना तथा गुड चीनी की अपेक्षा स्वास्थ्यवर्धक क्यों है यह समझा. बच्चों के विकास में प्रथिनों का विशेष महत्त्व ध्यान में रखते हुए मूंगफली तथा तील के इस पदार्थ को चुना गया है यह समझा. सामुदायिक उपक्रमों में पुरे उत्साह से मिलकर बड़ा सा काम करने का यह अनुभव था.

कक्षा 8 के बच्चों ने अध्यापक के मार्गदर्शन में सलाद डेकोरेशन का भी विशेष अनुभव लिया. नववी कक्षा के बच्चों ने दसवी के छात्रों के लिए खास वार्षिक भोजन का आयोजन किया था. और अपने काम का विशेष रिपोर्ट बनाया.

कक्षा 9 का खाद्य तेल सम्बन्धी विशेष प्रोजेक्ट

हमारे अन्न का एक छोटा, नियमित एवं महत्त्वपूर्ण हिस्सा याने तेल. हमारे परम्परागत तेल सामान्यत: मूंगफली, तील, सरसों, जवस, नारियल जैसे तेल - बीज से प्राप्त होते रहे है. किन्तु पिछले कुछ सालों से हमारे भोजन में सोयाबीन तेल का प्रमाण बड़ी मात्रा में बढ़ा है. सोयाबीन की फसल हमारे देश में तुलना में नयी है. उससे तेल निकालने की प्रक्रिया कोल्ड प्रेस की बजाय साल्वेंट मेथड से होती है जिसमे स्वस्थ्य के लिए बेहद हानिकारक रसायनों का उपयोग किया जाता है. इस संदर्भो में इस सिलसिले में मगन संग्रहालय की अध्यक्षा डॉ. विभा गुप्ता जानकारी प्राप्त हुई तथा उनके तेल स्वराज अभियान को भी जाना. इस विषय पर विशेष अध्ययन प्रकल्प लेने का निर्णय छात्रो के साथ चर्चा करने पर हुआ. एक तरह से अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों का अध्ययन इसमें साथ साथ चला. नेट पर शोध लेते समय कई तरह के शोध-लेख प्राप्त हुए जिसमे खाद्य तेलों में कम गुणवता के ही नहीं तो हानिकारक तेलों की भी मिलावट बड़ी मात्र में होने की गंभीर समस्या की जानकारी मिली. वास्तव जानने के लिए पहले चरण में इस विषय पर अधिक अध्ययन करने हेतु स्थानिक संस्था ग्रामसेवा मंडल की ऑइल मिल को भेट देकर तेल बनाने की प्रक्रिया समझी. बाजार में मूंगफली का तेल १३० रुपये में मिलता है, किन्तु मिलावट न करते हुए वह तेल २०० रुपयों के निचे प्राप्त होना कैसा असंभव है यह हम अध्यक्षा श्रीमती करुणा फुटाणे से समझ सके. इस प्रश्न से सम्बंधित कई महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक बातों को जान पाए. उपभोक्ता की इस विषय पर क्या समझा है यह विशेष प्रश्नावली बनाकर जानने का प्रयास हुआ. सैचुरेटेड – अनसैचुरेटेड – पॉली अनसैचुरेटेड हैड्रोकार्बन क्या है, तथा इनका खाद्य तेल के साथ का सम्बन्ध, हमारी खाद्यतेल उपयोग में लाने के सही –गलत तरीके आदि मुद्दों पर भी छात्र समझ बना पाए है. अमरीका द्वारा सोयाबीन तेल के बड़ी मात्रा में सबसिडी देकर सस्ते रूप में भारत को निर्यात करने से हमारे किसानों को तेलबीज उत्पादन के लिए सही दाम मिलने में आनेवाली रुकावट तथा तेल बीज के उत्पादन में हमारे देश की स्वायत्तता ख़त्म होने की परिस्थिती को डॉ. वदना शिवा के लेखों से हम समझ पा रहे है. अगले सत्र में यह प्रकल्प का अगला चरण शुरू होगा.

वस्त्रकला एवं शिक्षा

वस्त्रकला में कताई, हाथ सिलाई, कशीदाकारी तथा मशीन सिलाई के माध्यम से काफी परिणामकारी ढंग से काम हो पाया. कताई का काम कक्षा दूसरी के साथ शुरू हुआ. बड़ी शांति के साथ हस्त नेत्र समन्वय साधते हुए बच्चे यह काम करते है. खादी के कपडे की निर्मिती की प्रक्रिया से परिचित होते हुए यह कम बच्चे सिखते है. पंडितभाऊने स्वतन्त्रता के आन्दोलन के साथ इस काम का सम्बन्ध जोड़ते सिखाया. खादी का कपड़ा बनने की प्रक्रिया में कितने लोगों को रोजगार मिलता है यह ग्रामसेवा मंडल तथा मग्न संग्रहालय के खादी काम को देखकर जाना. 'भारत का कपडे के इतिहास' कक्षा 7 व् 8 के बच्चो को एकलव्य के तथा एन. सी. ई. आर. टी की किताब से अध्ययन करने का मौका मिला. सूती कपडे का पसीना सोखने का, गर्मी में ठंडक देनेवाला और ठण्ड में गर्म रखनेवाला प्राकृतिक गुणधर्म छोटे बच्चो ने तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा समझा. उन, कृत्रिम कपडा, सिल्क तथा कपास का बना कपड़ा जलने का तरीका, तथा जलते समय आनेवाली गंध का अलगपन बच्चों ने अनुभव किया. इस कपडे पर प्राकृतिक रंगों से कलाकारी का अनुभव लिया. कक्षा 8 को कपास से सुपर मार्केट तक का कपडे का प्रवास स्विट्ज़रलैंड के HEP (हायर एजुकेशन प्रोग्राम) के साथियों के जानने समझने का मौक़ा मिला. चित्र , फिल्म, जानकारी, नाटक आदि के माध्यम से कपडे की आर्थिक बाजू समझाने का बेहतरीन मौक़ा मिला. यह अनुभव दोनों विद्यालय तथा स्विट्ज़रलैंड के साथी दोनों के लिए उपयुक्त रहा.

विद्यालय का पोशाख खादी का हो यह सामान्य मान्यता रही है. किन्तु साथ साथ यह भी मानना था कि दबाव के बजाय समझबुझकर बच्चे तथा अभिभावक भी खादी का स्वीकार करें. कृत्रिम कपड़ों के आकर्षक रंग तथा टिकावूपन के सामने खादी की कीमत, कपड़ा तथा रंगों का कच्चापन खादी को स्वीकारने में बाधा डालता है यह अनुभव में आ रहा था. अत: अधिक ज्ञानपूर्वक तथा कपडे के रंगों में कुछ बदलाव के साथ नया पोशाख चुनने का निर्णय विद्यालय ने लिया तथा अभिभावकों के सामने अपना विचार रखते हुए वे उससे विचारपूर्वक सहमत हो ऐसा आह्वान किया गया. सभा में उपस्थित अभिभावकोंने इसे ख़ुशी से सम्मति दी.

कशीदाकारी तथा मशीन की सिलाई द्वारा हुए काम भी बच्चों ने खूबसूरती से और आनंद से किया. यह सभी चीजें फरवरी में आयोजित बालशिक्षण जत्रा में बड़े पैमाने में बिका तथा मेहमानों / स्नेहीजनों द्वारा खरीदा गया. साधारण रूप से २० हजार की कमाई यह विभाग कर पाया. इस वर्ष के काम में सफाई, सुन्दरता तथा नवीनता विशेष रूप से नजर आयी. किन्तु इस काम का अन्य विषयों से पर्याप्त मात्रा में समन्वय नहीं हो पाया यह ध्यान में आया. अगले वर्ष यह कमी हटाई जाएगी.

विषय ज्ञान का क्षेत्र:

बोलना पढ़ना लिखना: प्रथम भाषा- मराठी, हिंदी, अंग्रेजी

हमारे व्यक्त होने में, संवाद के लिए, समस्याओं का हल निकालने के लिए, औरों के अनुभवों से अपनी समझबूझ और चिंतनशीलता विकसीत करने के लिए, ज्ञाननिर्मिती के लिए भाषा हमारा साथ देती है. अत: उसे पाठ्यपुस्तकों के बाहर निकालकर जीवनानुभवों के साथ, दूसरों के अनुभवों के साथ (प्रत्यक्ष तथा किताबों के माध्यम से) भाषा विकास के लिए हमारा जुड़ना आवश्यक है. अत: इस दिशा में विभिन्न प्रयास किये गए.

प्राथमिक कक्षाओं में बोलने का, कहानियां सुनने का मौक़ा मिलता रहे इसके लिए भरकस कोशिश हुई. कहानियों के आधारपर नाटक बनाने का भी मौक़ा मिला. हर कक्षा में पढ़ने के लिए किताबे उपलब्ध कराई गई ताकि बच्चों को पढ़ने के लिए किताबे आसानी से मिल सकें. विद्यालय में उम्र के अनुसार विपुल चुना हुआ, खास अनुवादित बालसाहित्य मराठी, हिंदी, अंग्रेजी भाषाओं ने खरीदा तथा उपलब्ध कराया गया. अरविन्द गुप्ता जी ने उपलब्ध कराई किताबों का भी इसमे समावेष है. प्राथमिक स्तर पर रोज शांति से पढने का १५-२० मिनट का समय रखा गया. अध्यापकों द्वारा भी कुछ खास किताबे बच्चों के लिए पढ़ी गयी.

खुबसुरती से पढ़ने का आनंद ले सके इसके लिए कक्षा ५ से सबके सामने खुले मंच पर पढ़ने की गतिविधि अपनाई गई. अध्यापक और बच्चें दोनों ने इसमें भागीदारी ली. किताबों का परिचय कराने की विधी भी अपनाई गई. दो पालकसभाओं में भी बच्चों ने विशेष बाते खूबसूरती से पढ़ने का उपक्रम लिया था.

कई तरह की बोली भाषाएँ विद्यार्थियों द्वारा बोली जाती है. यहाँ बहुसंख्य बच्चों द्वारा बोली जानेवाली भाषा प्रमाण भाषा से काफी अलग है; इसपर हिंदी का भी गहरा प्रभाव है जिस कारणवश भाषा के व्याकरण में भी फर्क पड़ता है. प्रमाण भाषा की ओर धीरे धीरे जाते समय बच्चों की भाषा का स्वीकार करते हुए प्रयास किया गया.

बच्चों के निजीगत तथा विद्यालयीन प्रश्नों से जुड़े विषयों पर साप्ताहिक चिंतन सभाओं के कारण भाषा का उपयोग प्रचुर मात्रा में करने का मौक़ा मिला इतनाही नहीं बच्चें और अध्यापकों में भावनिक बांध भी ज्यादा अनौपचारिक बने, बच्चों के सोचने के तरीकों से अध्यापकों का परिचय बढ़ा. बच्चों के स्वयंप्रेरित और विवेकपूर्ण होंने में भी इससे सहायता मिली.

चिंतनशील अभिव्यक्ति के लिए

इन चिंतन सभाओं में जिस तरह के विषयों पर बातचीत हुई है इसका अंदाज निम्न विषयों को देखकर लगाया जा सकता है.

1. हमारे नियम क्या हो? 2. चलें, एक दुसरें का ध्यान रखें 3. हमारे रिश्ते कैसे हो? 4. पर्यावरणकेंद्री गणेशोत्सव क्यों? ५. हम नियमों को बनाते है किन्तु पालन नही करते. ऐसा क्यों? 6. इस सत्र में मैंने क्या सिखा? 7. मेरा अभ्यास पत्रक 8. दिवाली और पटाखे 9. हम क्यों लड़ते है? 10. स्वतन्त्रता किसे कहे? ११. मेरी अच्छइयां १२. बाग़ में काम करते समय किन बातों का ख्याल रक्खें? 13. हमारी बालजत्रा में किन बातों का हमें ध्यान रखना होगा? १४. साबुन का उपयोग हम कैसा करें? १५. प्रजासत्ताक व्यवस्था के लिए मेरा वर्तन कैसा हो?
१६. स्त्री – पुरुष समता और हमारा वर्तन १७. मेरे मित्रों के विशेष गुण १८. चिढाने की मर्यादाए और उभरने वाले प्रश्न १९. विद्यालय और कक्षा के सफाई तथा कचरा व्यवस्थापन सम्बन्धी प्रश्न और हमारी जिम्मेदारियाँ २०. कक्षा प्रमुख की जिम्मेदारियाँ व सबके सहयोग की आवश्यकता २१. हमारी अंधश्रद्धाएँ

इन सभाओं में हर बच्चे को बोलने का / अभिव्यक्त होने का मौक़ा मिलता है. अबोल बच्चा भी व्यक्त हो इसका ध्यान रखा जाता है.

आओं, हम अच्छे श्रोता बने

एक दुसरे को समझने के लिए धीरज रखने की आवश्यकता होती है, उसी तरह से विभिन्न विषयों पर अध्ययन करनेवाले लोगो के विचार तथा अनुभवों को सुनने का मौक़ा विशेष कर बड़े बच्चों को दिया गया.

1. पानी के प्रश्न पर जलपुरुष - श्री राजेन्द्रसिंह जी,
2. आज की व्यवस्था और समता के प्रश्न सुश्री मेधा पाटकर जी,
3. प्रजासत्ताक रचना और हमारी जिम्मेदारियां, इस विषय पर सुनील लवाटे,
4. गांधी और विज्ञान इस विषय पर डॉ. अभय बंग,
5. संविधानिक मूल्य व हमारे प्रश्न इस विषय पर डॉ गणेशदेवी
6. पक्षियों का महत्त्व,: बहार नेचर फाउंडेशन के श्री किशोर वानखड़े
7. समूहशक्ती से ग्रामविकास की ओर: पाचगांव का प्रवास – विजय और स्मिता देठे
8. जीवसृष्टि में पक्षिओं का महत्त्व- श्री. उल्हास राणे और अनिल पिम्पलापुरे
9. गांधीजी जयंती पर श्री. अपूर्वानंद जी, दिल्ली
10. वैकल्पिक तंत्र: मिटटी के घर: सुश्री मीनाक्षी बहन
11. स्विट्ज़रलैंड: प्रकृति तथा समाज जीवन : HEP स्विट्ज़रलैंड के हमारे मित्र

लेखन कार्य

किताबी ढांचे में न अटकते हुए विभिन्न विषयों पर अपने विचार, निरीक्षण, अनुभव, कल्पनाओं के साथ समूह चर्चा तथा लिखित अभिव्यक्ति हुई.

गणित विज्ञान और भूगोल

यह विषय प्रत्यक्ष अनुभवों से बेहतर तरीकों से सीखने को मिले इसके लिए अध्यापकों ने खूब मेहनत ली. कई तरह के साधनों के साथ अध्यापन किया. प्रत्यक्ष कृति तथा प्रयोगों से सिखने के मौके दिए. हर कक्षा में विभिन्न क्षेत्र से सम्बंधित प्रयोगों की तथा ऑडियो – विजुअल कार्यक्रमों की शुची बनाई गयी तथा उनके उपयोग से सही संकल्पनाए तैयार हो इसकी कोशिश हुई.

गणित अध्यापन में नवनिर्मिति, विक्रम साराभाई केंद्र आदि द्वारा निर्मित गणित के साहित्य का अध्यापन में उपयोग किया गया. व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए वर्कशीट्स की निर्मिती अध्यापको द्वारा की गयी.

कक्षा के भीतर, बाहर, विज्ञान तथा खगोल के मोडल के साथ प्रयोग लगाए गए, सूरज की स्थिति से सम्बंधित खगोल के प्रयोग हुए. श्री प्रदीप दासगुप्ता जी के मार्गदर्शन में आकाशदर्शन कराया. पाठ्यपुस्तकों के आलावा होमी भाभा विज्ञान केंद्र की किताबें, एन.सी. ई.आर.टी. की किताबो का भी अध्ययन में उपयोग लिया गया.

तालुका स्तर तथा बजाज विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित विज्ञान प्रदर्शन में कक्षा 8 के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय का कचरा व्यवस्थापन का प्रोजेक्ट तथा बच्चो के द्वारा बने गणित के मॉडल्स रखे गए थे.

होमी भाभा विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित परीक्षा में कक्षा 6 की रिया गायकवाड ने पास की.

कला कार्य

चित्रकला, संगीत – गायन, तबला वादन तथा नृत्य-लोक नृत्य तथा कथ्थक सिखाने की सुविधा विद्यालय अपने छात्रों के लिए कर पायी है. नियमित अध्ययन अनुभवों के साथ साथ जो छात्र परीक्षा देना चाहते थे उन्हें भी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया गया.

चित्रकला के एलिमेंटरी तथा इंटरमीडिएट परीक्षा में २१ छात्र सहभागी हुए थे जिनमे से सभी छात्र उत्तीर्ण हुए. 9 छात्र B ग्रेड में तथा बाकी C ग्रेड मे.

तबला वादन की परीक्षा 6 बच्चों ने दी. जिनमें से तीन बच्चे प्रथम श्रेणी में और अन्य तीन द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए.

गायन में 8 बच्चियां दूसरी परीक्षा में तथा 2 बच्चियां तीसरी परीक्षा में सहभागी हुई. एक छात्र प्रथम श्रेणी में तथा अन्य द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है.

अभ्यास भेंट

सभी उम्र के छात्रों के लिए पसंदगी का तथा उनके अनुभवों का विश्व विस्तारित करने वाला यह अध्ययन प्रकल्प. हर भेंट के उद्देश्यों की सही समझ बनाते हुए व्यवस्थित तैयारी के साथ निम्नलिखित अभ्यास भेंट का कार्यक्रम बनाया गया.

कक्षा	अभ्यास भेंट
1.	आश्रम का परिसर *आश्रम का तथा विद्यालय का खेत *नयी तालीम कुटी * विज्ञान भवन * करुणाश्रम (अपाहिज प्राणी तथा पक्षी) 3.
2.	आश्रम का परिसर *आश्रम का तथा विद्यालय का खेत *नयी तालीम कुटी * विज्ञान भवन * करुणाश्रम (अपाहिज प्राणी तथा पक्षी इनका आधार गृह) *विद्यालय का कार्यालय
3.	आश्रम का परिसर * ग्रामसेवा मंडल, गोपुरी – खादी और तेल निर्मिती
4.	आश्रम का परिसर, * अंध तथा मूक बधिर विद्यालय
5.	* आश्रम का परिसर, प्रवृत्तियाँ तथा इतिहास * कस्तूरबा मेडिकल कोलेज का एनाटोमी विभाग का एक्जीबिशन * पोस्ट ऑफिस * बोर डैम तथा अभयारण्य * इंटभट्टी और दालमिल
6.	ग्रा मोपयोगी विज्ञान केंद्र * बोर डैम तथा अभयारण्य *बजाज सायन्स केंद्र,
7.	ग्रा मोपयोगी विज्ञान केंद्र * बोर डैम तथा अभयारण्य *बजाज सायन्स केंद्र,
8.	*आश्रम परिसर * स्थानिक बैंक का कामकाज * चिखलदरा तथा सम्पूर्ण बाम्बू केंद्र, लावादा, *मुक्तागिरी
9.	* चिखलदरा तथा सम्पूर्ण बाम्बू केंद्र, लावादा, *मुक्तागिरी
10	* चिखलदरा तथा सम्पूर्ण बाम्बू केंद्र, लावादा, *मुक्तागिरी

विशेष कार्यक्रम
नाट्य शिबिर

श्री संजय हल्दिकर, कोल्हापुर, के मार्गदर्शन में यह शिबिर कक्षा ५ से 9 के बच्चो के लिए संपन्न हुआ. मुक्त अभिव्यक्ति का अनुभव दिलानेवाला यह शिबिर छोटे छोटे नाट्यखेल, नाटयानुभुती से भरपूर था. बच्चों ने इसका खूब आनंद लिया.

कक्षा 7,8, 9 के छात्रो के साथ पथ नाट्य की निर्मिती हुई जिसका नाम था "गाँधी उद्यासाठी (गांधी- भविष्य के लिए)". इस 12 मिनट की अभिव्यक्ति के 7 प्रयोग हुए. हर प्रयोग के साथ छात्र ज्यादा विश्वास तथा खुलेपन के साथ व्यक्त हुए. इस नाटक के चार सार्वजनिक प्रयोग प्रजासत्ताक दिन पर, बालशिक्षण जत्रा, गाँधी विज्ञान सम्मलेन, सेवाग्राम तथा, सार्वजानिक वाचनालय, वर्धा में कुमार प्रशांत जी के जाहिर व्याख्यान के पूर्व में हुआ. संविधानिक मूल्यों के संदर्भो में हमारी खेती तथा किसानों की समस्याए, शिक्षाव्यवस्था के सवाल, वस्त्र तथा खादी की ओर विकेन्द्रित रोजगार तथा स्वावलंबन की गांधीजी की दृष्टी तथा विश्व में मानवता के विकास की एवं पर्यावरण के सन्दर्भ में संवेदनशीलता पर आधारित इस प्रस्तुति की उपस्थित मान्यवरों ने खुले दिल से प्रशंसा की.

विद्यालय की अभिभावक तथा नाट्यकर्मी- सुश्री. ओजस सु. वि का इस काम में विशेष सहयोग रहा.

आनंद निकेतन का प्रदर्शन कुछ शहरों में

इसी शिबिर के दौरान बच्चों ने 'मेरा विद्यालय' इस विषय पर चित्र बनाए तथा लेखन किया जिस आधार पर श्री. हल्दिकर जी द्वारा विद्यालय पर छोटा चित्रप्रदर्शन बनाया गया. यह प्रदर्शन कोल्हापुर तथा पुणे में प्रदर्शित हुआ है. कुछ अन्य शहरों में भी यह प्रदर्शन लगेगा. गाँधी 150 के निमित्त से प्रेरित हल्दिकर जी के इस कार्य के लिए विशेष आभार.

आओं, वर्धा का पक्षी चुने

बहार नेचर फौन्डेशन द्वारा आयोजित इस प्रक्रिया में विद्यालय का भी सहभाग रहा. इस बहाने पक्षियों का पर्यावरण में महत्त्व जानना, पक्षियो की पहचान करना, पक्षियो की चुनाव प्रक्रिया में शामिल होना ऐसे कई मजेदार बाते संभव हुई.

बालशिक्षण जत्रा का आयोजन

दो दिवसीय इस जत्रा का आयोजन सहयोगी व्यवस्थापन कार्य का बेहतरीन उदाहरण कहा जा सकता है. बच्चे और अध्यापकों के कई दिनों के परिश्रम तथा सहयोग से संपन्न हुई इस जत्रा में करीब करीब हर चीज बच्चो द्वारा निर्मित तथा आयोजित थी. इस जत्रा में निम्न लिखित दालान थे:

1. शैक्षिक तथा रंजक खेल, 2. विज्ञानं के प्रयोग तथा चालित मॉडल्स 3. स्वास्थ्य विषयक दालन जिसमे हिमोग्लोबिन टेस्ट , बॉडी मास इंडेक्स कराना, फेफड़ों की क्षमता जाँचना, खानपान सम्बन्धी उपयुक्त जानकारी आदि; 4. बच्चों का लेखन कार्य, ५. बच्चों की कला का प्रदर्शन, 6. बच्चो द्वारा निर्मित वस्तुएं, - थैलियाँ, पर्सेस, पाउचेस, आसन, डोअर मॅट, रुमाल, भेंट कार्ड, विज्ञान के खेल, चटनियाँ, अचार, बाग़ की सब्जियाँ आदि. 7. करके देखो – विज्ञान के खेल, टोपियाँ आदि 8. सांस्कृतिक दालन – बालवाडी के कार्यक्रम तथा पथनाट्य 9. खान पान का मजा: अध्यापक तथा बच्चो द्वारा बनाए गए खाद्य पदार्थो की बिक्री

अंदाजन ३० हजार की आय इसमें से प्राप्त हुई. अंदाजन ८०० लोगों ने जत्रा का लाभ उठाया.

बालवाडी के कार्यक्रम की खूब सराहना हुई जिसका विशेष उल्लेख जरूरी है.

अभिभावक, विद्यालय के स्नेहीजन, शिक्षा में रूचि रखनेवाले करीबी क्षेत्र के लोग, अंड के लिए आए पड़ोसी क्षेत्र के बच्चे तथा लोग सभी ने इस आयोजन का आनंद लिया. छात्र तथा अध्यापकों के लिए भी यह एक सार्थक अनुभव रहा.

प्रजासत्ताक दिन का आयोजन

छात्रों के लम्बे परिश्रम से तथा इस काम के नियोजन में लगे अध्यापक, मनोजदादा तथा उनके साथियों के मेहनत से सर्वांग सुन्दर शारीरिक कलाकृतियों का कार्यक्रम संपन्न हुआ. कवायत प्रकार, लेझीम, सूर्य नमस्कार, सिल्क रोप पर की गयी कलाकृति सभी में विशेष सफाई थी. समूहगान, बच्चों के उत्स्फूर्त भाषण का भी उल्लेख करना होगा.

कार्यक्रम के अतिथि तथा संस्था के अध्यक्ष डॉ. सुगन बरंठ जी ने मौलिक मार्गदर्शन किया. अभिभावक, स्विट्ज़रलैंड के मेहमान तथा कई दानदाता इस कार्यक्रम के लिए उपस्थित रहे.

स्विट्ज़रलैंड के HEP संस्था से विद्यालय के साथियो को निमंत्रण तथा उनके अध्यापकों की आनंद निकेतन को भेंट:

पिछले वर्ष HEP (Higher Education Programme), दिल्ली विश्व विद्यालय और आनंद निकेतन के बीच तय किये गए कार्यक्रम के अनुसार विद्यालय की शिक्षा पद्धती को समझने तथा मिलकर "एक मोड्यूल – हिस्ट्री ऑफ़ कॉटन" पर बनाने और इस्तेमाल करने का निश्चित हुआ था. उसके अनुसार HEP के ट्रेनी अध्यापकों को लेकर नदिया तथा उसकी दो साथी आए थे. उसी प्रोजेक्ट के दुसरे हिस्से के रूप में आनंद निकेतन के दो साथी, सुषमा तथा जया को और दिल्ली विश्व विद्यालय से डॉ. अनिता रामपाल और दो साथियों को निमंत्रित किया गया. उसके अनुसार दो सप्ताह की यह अभ्यास भेट हुई. इस भेंट के दौरान HEP के कार्य को समझना, उस देशा के सरकारी तथा प्राइवेट विद्यालयों की स्थिती समझने का मौक़ा मिला. वहां के वोकेशनल कोर्सेस कैसे चलते है यह जाना. वहां की संस्कृति, प्रकृति तथा कंट्री साइड देखने का मौका भी प्राप्त हुआ.

इस वर्ष भी ही (HEP) संस्था के 14 ट्रेनी अध्यापक तथा 2 मार्गदर्शक नदिया के नेतृत्व में, जो "शाश्वत विकास के लिए शिक्षा" इस विषय की प्रमुख है विद्यालय आए थे. उनके साथ दिल्ली विश्व विद्यालय से डॉ. अनिता रामपाल और पारुल भी रही. "हिस्ट्री ऑफ़ कॉटन" इस विषय पर अगला काम हुआ. 6-7 वर्ष की उम्र तथा १५-१५ की उम्र के बच्चो के साथ यह काम हुआ जिसका बच्चों ने बहुत आनंद लिया. ट्रेनी साथियों के साथ बच्चों ने कई अन्य अनुभव भी लिए. अन्य संस्कृति को समझने का मौक़ा मिला.

टाइनी टेल्स

कहानियां बच्चों को बेहद अच्छी लगती है. अगर यह कहानियां नाटक के रूप में प्रस्तुत की जाय तो? हाँ बहुत मजा आता है. यही मजा अनुभव किया पुणे के Tiny Tales के कल्पेश तथा उनके साथी के साथ. 3 घंटो की यह प्रस्तुति बालवाडी के बच्चो से लेकर 10 वी कक्षा तक सभी को बेहद ख़ुशी महसूस हुई.

अभिभावक सभाए:

इस वर्ष दो सभाओं में खास रूप से बच्चों के काम का लेखाजोखा खास बच्चों की ओर से ही अभिभावकों के सामने रखा गया. वर्षारंभ में हुई सभा अभिभावकों को शिक्षा के बारे में समूह में विस्तार से सोचने का मौक़ा देनेवाली थी. इसमे अभिभावकों को आपसी संवाद करने का मौक़ा मिला. बालवाडी की सभाए मुख्यत: छोटे बच्चों के सिखाने की प्रक्रिया, उनका स्वास्थ्य तथा विकास पर मुख्या रूप से आधारित रही. बच्चों की स्वतन्त्रता का सम्मान करने की आवश्यकता, उनके अनुभवों को विस्तृत करने हेतू बच्चों को समय दिये जाने की आवश्यकता पर बात हुई.

विशेष पुरस्कार:

स्व. डॉ. जया द्वादाशीवार, प्राध्यापक तथा लेखिका के प्रथम स्मृति में श्री. सुरेशा द्वादशीवार, विचारक तथा लेखक द्वारा पुरस्कृत सम्मान समारोह में आनंद निकेतन की संचालक, सुषमा शर्मा को नयी तालीम के कार्य के लिए सम्मानित किया गया तथा एक लाख की सहाय्यता राशी भी दी गयी. यह सम्मान विद्यालय के सभी साथियों के श्रम तथा लगन से काम करनेवाली समूहशक्ति का सम्मान है ऐसा मानना होगा.

विशेष भेंट:

आर्यनायकम जी तथा आशादेवी आर्यनायकम की बेटी, श्रीमती मीतू घोष पुरे परिवार (बच्चे तथा पोते-पोतियों के साथ) सेवाग्राम आयी. नयी तालीम का सेवाग्राम का प्रयोग अपने पर नाना तथा नानी के नेतृत्व में चला यह जानना बच्चों के लिए बेहद भावनात्मक अनुभव रहा. विद्यालय के काम को पुरे पारिवारिक सदस्यों ने विशेषरूप समझना चाहा. उनका स्वागत करने में विद्यालय के सभी साथियों के लिए विशेष भावभरा प्रसंग था.

अध्यापकों के क्षमतावृद्धि के लिए

अध्यापकों को अपनी समझ गहरी और व्यापक करने के कई मौके इस वर्ष मिले और आयोजित भी किये गए. इन मौकों को सभी अध्यापको ने पसंद किया. यह वर्ष बा- बापू 150 वा वर्षा था. अत: गांधीजी का जीवन/ जीवनदृष्टि, तथा उनका कार्य इस पर समझ बनाना, आज के संदर्भो में उनके विचार तथा जीवनदृष्टी का औचित्य जानना संभव हुआ. नयी तालीम का काम विचारनिष्ठा से होने के लिए इन मौकों का विशेष लाभ हुआ.

क्षमतावृद्धि के लिए अध्यापकों का विभिन्न कार्यक्रमों में सहभाग कुछ इस तरह रहा:

क्रम	तज्ञ तथा विषय	सहभागी अध्यापक
1.	हवामान कार्यशाला, पुणे (28.08 से 2.09. 2018)	02
2.	एक्टिव लर्निंग (भैतिकशास्त्र तथा रसायन शास्त्र), बजाज सायन्स सेंटर द्वारा आयोजित	02
3.	वर्कशॉप: Courage to Lead: Expedition mode of Learning, Disha Foundation	02
4.	संवाद: मीनाक्षी बहन, शिक्षाकर्मी तथा वास्तुरचनाकार (मिट्टी के पर्यावरण -स्नेही घर)	12
5.	पाचगाँव के विकास की कहानी: विजय तथा स्मिता देठे	सभी साथी
6.	बहार नेचर फौन्डेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम : पक्षियों का महत्त्व	02
7.	आओ गांधी समझे : I. डॉ. अपुर्वानद, नयी दिल्ली, इतिहासकार II. श्री. कुमार केतकर, जेष्ठ पत्रकार III. कुमार प्रशांत: गाँधी की प्रासंगिकता, गाँधी और जीना, गाँधी और सरदार पटेल, ३० जनवरी	10 साथी
8.	श्री. सुरेशा द्वादशीवार, जेष्ठ साहित्यिक तथा पत्रकार: गाँधी और उनके टीकाकार 'अध्यापक की तैयारी कैसे हो?' इस विषय पर संवाद	10 साथी 15 साथी
9.	गांधी विज्ञान समेलन, में सहभाग	सभी 25 साथी
10.	Preethi Rajshekhar: Montessori Method for language learning	8
11.	Krunal: Socio- Emotional Learning Curriculum (First phase)	सभी 25 साथी

नयी तालीम का शिक्षाविचार तथा कार्य पद्धति का प्रसार हेतु काम: संक्षिप्त उल्लेख के साथ

अनु क्रम	काम का स्वरुप	द्वारा
1.	नयी तालीम विचारों पर लेखन कार्य तथा प्रकाशन: - राजहंस प्रकाशन के लिए दीर्घ लेख - लोकमत में गांधी और वैज्ञानिकता	सुषमा शर्मा
2.	नयी तालीम: शास्त्रीय शिक्षा पद्धति: गांधी विज्ञान सम्मलेन, सेवाग्राम	सुषमा शर्मा
3.	स्विट्ज़रलैंड में विद्यार्थी समूह, शिक्षक, दानदाता, तथा शिक्षा कार्यक्रमों के नियोजकों के सामने नयी तालीम पद्धती पर प्रस्तुति	सुषमा शर्मा
4.	- हिंदी विश्व विद्यालय के बी. एड. के 6 छात्रों का विद्यालय में 6 माह का इंटर्नशिप कार्य - डॉ. वृषभ, म.गां हिंदी विश्व विद्यालय, वर्धा	
5.	प्रगत शिक्षण संस्था, फलटण की और से अध्यापको ने समूह का ओरिएंटेशन शिबीर	विद्यालय के सभी साथी
6.	कोटक फौन्डेशन, बम्बई के अध्यापकों के दो समूह	विद्यालय के सभी साथी
7.	काम समझने के लिए आए कुछ मेहमान: - कोइम्बतुर से प्रेमा रंगाचारी जी के विद्यार्थी तथा अध्यापक	
	- छत्तीसगढ़ से भूपेश भाई तथा उनके साथी	
	- कर्नाटक महिला संघटन के कार्यकर्त्ता , - पानी फ़ौंडेशन के साथी - DMI, पटना से अदिति ठाकुर तथा साथी	
	- मानव साधना, गुजरात के शिक्षा कार्यकर्ता	
	- दिल्ली विश्व विद्यालय से विद्यार्थी: अध्ययन हेतु - दिपोन देब, टीच फॉर इंडिया फेलो, कोलकाता	

आनंद निकेतन के अर्थ - सहयोगी

8.	चम्पारन जिला, बिहार से सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के लिए नयी तालीम का दो सप्ताह का प्रशिक्षण, डेवलपमेंट मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट, पटना के लिए आयोजित	

हमारे अर्थ - सहयोगी जिनके कारण हम यह काम शान्ति से कर पा रहे है उनके आभार व्यक्त किये बगैर यह कार्य विवरण पूरा नहीं हो सकेगा.

1. बजाज फौन्डेशन, बम्बई
2. मोटिवेशन फॉर एक्सलेंस, मानुधने ट्रस्ट, मुंबई
3. डॉ. आनंद केलकर, केलकर हेल्थ सोलुशन्स, पुणे तथा उनके कई साथी जो अब विद्यालय के स्नेही बन चुके है
4. विलेजेस सन फ्रंटियर्स, फ्रांस
5. आशीष वेले, जिन्होंने अपनी माँ , विजया वेले, जो सर्वोदयी विचारों अध्यापक रही है, उनकी स्मृति में छात्रों के लिए शिष्यवृत्ति का आर्थिक प्रावधान किया.
6. डॉ. प्रकाश कलंत्री, जिन्होंने अपने माता- पिता के स्मृति में सहयोग दिया.
7. सुनील फरसोले, जिन्होंने अपने काकी के स्मृति में सहाय्यता की.
8. अतुल – सुषमा शर्मा, के परिवार के स्नेहीजन जिन्होंने डॉ. रविशंकर तथा वासंती शर्मा इनके स्मृति में सहयोग किया

इनके अलावा कई साथी जिनका नाम जगह की मर्यादा में यहाँ नहीं लिख पाए है, उन सभी का मन;पूर्वक आभार. आप सभी के स्नेह और सहयोग के बगैर हम यह काम नही कर पाते.

==========